वी.सी.डी. नं.85, इंद्रप्रस्थ (टी.पी.जी. पार्टी)

मु.ता. 21.06.65, व्याख्या ता. 08.09.03

(शिव और शंकर अलग-अलग हैं)

आज मुरली है 21 जून, 1965 की। रिकॉर्ड चला है- भोलेनाथ से निराला कोई और नहीं...। ओम् शांति, भोलानाथ सदैव शिव को ही कहते हैं। भोलों का नाथ किसे कहा जाता है? जो सदा ही कल्याणकारी है वही भोलानाथ हो सकता है। अगर कभी कल्याणकारी है, कभी शिव है, कभी अशिव है तो उसे भोलानाथ नहीं कहा जा सकता। शिव-शंकर का भेद तो अच्छी रीति समझा है। क्या भेद है? शारीरिक रूप से भेद है या आत्मिक रूप से भेद है? शिव और शंकर में आत्मा के हिसाब से भेद है या शरीर के हिसाब से भेद है? व्यक्तित्व के हिसाब से भेद है? (किसी ने कहा- व्यक्तित्व) व्यक्तित्व के हिसाब से भेद है? पर्सनैलिटी तो एक ही है। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं- शिव-शंकर पर्सनैलिटी से एक हैं; लेकिन आत्माएँ दो अलग-2 हैं। शंकर को तीसरा नेत्र दिखाया जाता है। वो तीसरा नेत्र कौन-सा नेत्र कहा जाता है? शिव नेत्र। वो शिव नेत्र हमारी-तुम्हारी आँखों की तरह ऐसा सीधा-2 नहीं होता है। कैसा होता है? (किसी ने कहा- सीधा) नहीं। खड़ा हुआ। ध्यान से देखा है? खड़ा हुआ क्यों दिखाते हैं; क्योंकि वो सदैव ही 24 आवर्स आत्मिक स्टेज में खड़ा रहता है। कौन? शिव या शंकर? शिव नेत्र। बाक़ी सभी देवताओं को अपने-2 नेत्र होते हैं। ब्रह्मा को भी अपने नेत्र हैं, विष्णु को भी अपने नेत्र हैं ऐसे ही शंकर को भी अपने नेत्र हैं; लेकिन वो सदैव खड़े हुए नहीं हैं माना आत्मिक स्थिति में लगातार कोई खड़ा रह सके, ऐसा सदाकाल कोई नहीं होता। एक शिवनेत्र ही है। तो पहला भेद ये हुआ कि शिव सदाकाल आत्मिक स्टेज में रहने वाला है, इसलिए सदाशिव कहा जाता है और जो भी देवताएँ हैं वो सदाशिव नहीं हो सकते हैं, कुछ न कुछ भेद होगा; लेकिन एक देवता ऐसा है जो शिव के साथ पूरा तादात्म स्थापन कर लेता है, ऐसा पुरुषार्थ करता है। पुरुषार्थ कौन-सा है? देवताएँ कौन-सा पुरुषार्थ करते होंगे? अच्छा! असुर कौन-सा पुरुषार्थ करते होंगे? चाहे देवता हों, चाहे असुर हों सबने एक परमात्मा को याद करने का ही पुरुषार्थ किया है। आत्मिक स्थिति में रहते हुए उस परमात्मा को सभी ने याद किया है। ये तपस्या तो सभी ने की है। तो ये जो तपस्या है, उस तपस्या में 33 करोड़ देवताओं के बीच में एक मूर्ति

सबसे तीखी जाती है। कौन-सी मूर्ति? शंकर की मूर्ति। इसलिए शिव और ब्रह्मा को मिला के एक नहीं कर दिया, शिव और विष्णु को मिला के एक नहीं कर दिया। किसको मिला के एक कर दिया ? शिव और शंकर को मिला के एक कर दिया। तो ज़रूर शंकर जो ध्यान मग्न बैठा हुआ दिखाया जाता है चित्रों में वो चरित्र इस बात को साबित करता है, उस चित्र को साबित करता है कि तादात्म स्थापन किया है। शंकर ने शिव के साथ समानता धारण की, इसलिए शिव और शंकर को मिला दिया गया। दुनिया प्रैक्टिकल स्वरूप को मानती है, सिर्फ कहने से और सुनने से मानने वाली नहीं है।

तो बताया शिव और शंकर का भेद तो अच्छी रीति समझा है। शिवलिंग कहा जाता है, शंकर लिंग नहीं कहा जाता। दूसरे देवता के साथ ऐसे नहीं कहा जाता है- ब्रह्मा लिंग, विष्णु लिंग। किसके लिए कहा जाता है? शिवलिंग। शंकर लिंग क्यों नहीं कहा जाता? शंकर रात्रि क्यों नहीं कही जाती? शिवरात्रि क्यों कही जाती है? कारण क्या है? कारण तो होगा ना; क्योंकि लिंग जो है वो एक ऐसी इन्द्रिय है जो काम विकार की सूचक है और उस इन्द्रिय के ऊपर एक ही सत्ता ऐसी है जो 33 करोड़ देवताओं को जीत पहनाती है। वो कौन-सी सत्ता है? 'शिव' और उन (कामेन्द्रिय पर) जीत पाने वालों में पहला नम्बर किसका है? शंकर का। इसलिए शंकर को इतनी शक्ति दिखाई गई है कि सागर मंथन हुआ तो क्या निकला? हलाहल विष निकला। कहते हैं ना विषय-विकार मिटाओ। उस हलाहल विष को उसने पी लिया। और देवताओं में इतनी ताकत नहीं थी कि उस ग्लानि के विष को, उस विषय-विकार के विष को पी जाते और पीने के बाद भी अपनी सत्ता (व्यक्तित्व) को अक्षुण्ण बना के रखते। बड़े-2 पुरुषार्थ करने वाले बड़े-2 तपस्वी हुए हैं, सब डाउन होते चले गए। माया किसी को छोड़ती नहीं है। (काम-) इन्द्रिय जीते जगतजीत कहा जाता है। नेपोलियन हो, चाहे मुसोलिनी हो, चाहे कोई भी हो, हिस्ट्री में दुनियाँ का कितना भी बड़े-ते-बड़ा सम्राट क्यों न हो, उसने अगर अपनी इन्द्रियों को जीतने का पुरुषार्थ नहीं किया तो वो (सारे) विश्व को विजय नहीं कर सकता। एक शंकर के लिए ये गाया हुआ है- 'विश्वनाथ'।

जिस (देव[1]+देव+[2]महादेव[3]) की यादगार में आज भी (3 शरीर रूपी वस्त्रों का मेल) झंडा-रोहण करते हैं तो क्या गाते हैं ? 'विश्व विजय करके दिखलावे'। झंडे में तीन कपड़े होते हैं। ये

भारत का ही झंडा है, जिसमें नीचे (रजोप्रधान ब्रह्मा का) हरा रंग दिखाया जाता है, बीच में विष्णु की सात्विकता का सूचक सफेद रंग दिखाया जाता है और ऊपर (ज्ञान की) क्रांति का सूचक केसरिया रंग दिखाया जाता है। (ज्ञान-) योगबल के आधार पर सारे विश्व में ऐसी समूची क्रांति की जाती है कि सारे विश्व की सत्ता उस एक (बेताज) देवता के हाथ में आती है। बाक़ी (जड़) कपड़े का झंडा कभी विश्व विजय करके नहीं दिखलावेगा। ज़रूर इस सृष्टि पर पहले कभी कोई ऐसी (संगठित) तीन हस्तियाँ हुई हैं- खासकर भारत में, जिन्होंने सारे विश्व के ऊपर योगबल से विजय प्राप्त की थी।

तो बताया कि बच्चों ने शिव-शंकर का भेद तो अच्छी रीति समझा है। क्या भेद है? शंकर को राजयोगी के रूप में दिखाया जाता है। क्या कहते हैं? योगेश्वर। योगियों का ईश्वर, कंट्रोलर। शिव के लिए ये नहीं कहते हैं। शिव उसमें ज़रूर प्रवेश करता है। शिव ऐसा चैतन्य, (तुरीया आत्म-) तत्व है जो कभी जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता, बाक़ी जितने भी (I टू लास्ट) देवात्माएँ हैं, वे सब जन्म-मरण के चक्र में आते हैं। कोई कहे शंकर के लिए तो नहीं कहा जाता है कि वह जन्म -मरण के चक्र में आता है। वास्तव में वो एक रहस्य की बात है। समझने की बात है। बाक़ी इस सृष्टि पर जो साकार रूप में पाँच तत्वों का चोला धारण करके आया है, वो पाँच (जर्जरीभूत) तत्व तो एकबार सभी को छोड़ने पड़ते हैं (गीता 2-27)। एक शिवतत्व ऐसा है जो न जन्म-मरण के चक्र में आता है और न किसी को जन्म देकर जन्म-मरण के चक्र में डालता है। बाक़ी जितने भी हैं- असुर, चाहे देवताएँ, वे स्वयं जन्म-मरण के चक्र में आते हैं और जो (इस चक्र में) आने वाला होगा वह दूसरों को भी लाएगा। शिव तो ऊँच-ते-ऊँच मूलवतन में रहने वाला है। अंग्रेज़ लोग उस (आत्मलोक) को क्या कहते हैं? 'सुप्रीम एवोड।' मुसलमान क्या कहते हैं? अल्लाह मियाँ कहाँ का रहने वाला है? 'अर्श का, सातवें आसमान का रहने वाला है।' अल्लाह अर्श में रहता है फर्श में नहीं रहता। गीता (15-6) में भी उस धाम का वर्णन है- जहाँ सूरज, चाँद, सितारों का प्रकाश नहीं पहुँचता वो मेरा परमधाम है। जहाँ आत्माएँ जाकर के फिर वापस इस मृत्युलोक में नहीं आतीं। बोला है- "न तद्भासयते सूर्यो" सूर्य का प्रकाश वहाँ नहीं पहुँच सकता। 'न शशांको' चंद्रमा का प्रकाश नहीं पहुँच सकता, तारागणों का प्रकाश वहाँ नहीं पहुँच सकता। "यद् गत्वा न निवर्तन्ते"

जहाँ जाकर आत्माएँ वापस इस मृत्युलोक में नहीं लौटतीं। अच्छा, आत्माएँ अगर इस मृत्युलोक में नहीं लौटेंगी तो ये सृष्टि तो खाली हो जाएगी! नहीं। उस श्लोक का ये अर्थ है कि इस मृत्युलोक में, कलियुगी दुनिया में वापस नहीं आतीं। कलियुग का अंत करने वाला है, कलह-क्लेश का जो युग है तामसी युग, उसको नष्ट करने वाला है। 'कल्पान्तकारी' कहा जाता है और नई सृष्टि का सृजन करने वाला है। वो है- सतयुगी नई सृष्टि। नया कल्प (चतुर्युगी) आरंभ करता है, पुराना कल्प खलास करता है। कौन करता है? शिव। किसमें करता है? शंकर में (प्रवेश करता है)। तो शिव-शंकर आत्माएँ अलग-2 हैं।

आत्मा चैतन्य शक्ति है। उसके मुकाबले आज की दुनिया का जो विश्लेषण करने वाले वैज्ञानिक हैं, वे उसे नाम देते हैं- एटम/आटम। वो जड़तत्व है। वे जड़त्व का विश्लेषण करते हैं। उन्हें उस चैतन्य का पता नहीं है। तो एटम और आत्मा ये दो शक्तियाँ हैं। एटम पाँच तत्वों से संबंधित चीज़ है और आत्मा पाँच तत्वों से बिल्कुल परे की चीज़ है। आत्मा का कॉन्सन्ट्रेशन करना सीख लिया तो बहुत बड़ी शक्ति हासिल हो सकती है। दोनों का रूप एक ही है। एटम भी अणु है। आत्मा भी अणु है। गीता में भी कहा गया है- "अणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः"। (गीता 8/9) योगी लोग जिसे अणु के रूप में स्मरण करते हैं, वो चैतन्य अणु है, चमकता हुआ अणु है, भृकुटि के मध्य में है इसलिए उसकी यादगार में टीका लगाते हैं, बिंदी लगाते हैं। उस बिंदी की रोशनी हमारी आँखों से निकल रही है। वो अणु जब तक भृकुटि में है तो आँखों में रोशनी है। वो आत्मा रूपी अणु निकल जाता है, तो आत्मा निकल जाने से आँखें पत्थर हो जाती हैं; लेकिन हरेक अणु जैसे अलग-2 होता है, ऐसे ही हर आत्मा अलग-2 है। मनुष्यों ने तो अनेक प्रकार की थ्योरी बना दी है। कहते हैं- सब आत्माएँ मिलकर एक ही आत्मा है, 'आत्मा सो परमात्मा,-' लेकिन ऐसी बात नहीं है। हर आत्मा में अपनी-2 शक्ति है, अपना-2 पार्ट भरा हुआ है। शिव की आत्मा में भी अपना पार्ट भरा हुआ है। क्या पार्ट भरा हुआ है? वो इस सृष्टि पर 84 (जन्मों) के चक्र में नहीं आता है; लेकिन जब कभी इस सृष्टि पर आता है उस पारलोक/ब्रह्मलोक से, तो हम आत्माओं को इस सृष्टि के बंधन से छुड़ाकर वापस ले जाता है। इस (पुरानी-तामसी) दुनियाँ के बंधन से छुड़ाने का उसका काम है, जिसको कहते हैं- 'मुक्ति।' इसलिए कहा- शिव तो ऊँच-ते-ऊँच मूलवतन का रहने वाला है। जो

सबसे ऊँचा होगा वो सबसे ऊँचा काम करेगा। 'ऊँचे-ते-ऊँचा करतार' कहा जाता है। उसके मुकाबले शंकर है सूक्ष्मवतनवासी। वह सदैव मूलवतन का रहने वाला नहीं है। सूक्ष्मवतन में भी 33 करोड़ देवताओं में सबसे ऊँची स्टेज है शंकर की, उनको परमपिता कैसे कह सकते हैं। माना शंकर को परमपिता नहीं कह सकते; 'जगतपिता' कह सकते हैं। जो जीता-जागता जगत है उसका पिता हो सकता है; लेकिन परमपिता नहीं हो सकता। अगर परमपिता होता फिर वो किसकी याद में बैठता है? चित्रों में, मूर्तियों में-जितनी भी प्राचीन मूर्तियाँ मिल रही हैं- (प्राय:) उन सब में याद में बैठा हुआ दिखाया गया है ना। तो किसको याद करता है? ज़रूर अपने से भी कोई ऊँची शक्ति है जिसको वह याद करता है। तो शंकर को परमपिता नहीं कह सकते। ऊँच-ते-ऊँच रहने वाला है एक बाप। कौन? शिव। जितनी भी बिंदु-2 आत्माएँ हैं, चाहे मनुष्यों की हों, चाहे पशु-पक्षियों की हों, चाहे कीड़े-मकोड़ों की हों, हैं सब ज्योतिबिंदु आत्मा; लेकिन उन सबका जो बाप है परमपिता वह सबसे ऊँच रहने वाला है माना ब्रह्मलोक में भी रहने की कैटेगरीज़ है। वह सबसे ऊँच रहने वाला है फिर दूसरे तबक्के (लोक) में हैं ये तीन देवताएँ- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर।

(शिव) बाप ऊँच-ते-ऊँच निराकार, शंकर है आकारी (सूक्ष्म वतनवासी)। शिव है भोलानाथ (सदा ब्रह्मलोकवासी)। शिव भोलानाथ है; लेकिन जब भक्तिमार्ग वाले भक्त गायन करते हैं तो क्या कहते हैं? शिव के साथ किसको जोड़ देते? (किसी ने कहा- भोले-भाले) हाँ, वो तो कहते हैं; लेकिन भोले+भाले, अकेले शिव को नहीं कहते। क्या कहते हैं? शिव-शंकर भोले+भाले। तो भोले के साथ भाला क्यों जोड़ दिया? क्योंकि शिव की सोल तो सदैव भोले का ही पार्ट बजाती है; लेकिन शिव जिसमें (मुकर्रर रूप से) प्रवेश करता है वो भोलों के लिए भोला है और भालों के लिए भाला है। कहते हैं काँटे से काँटा निकाला जाता है। काँटा निकालने के लिए कोई फूल उपयोग नहीं किया जा सकता। जो जैसा है उसको सुधारने के लिए थोड़े समय के लिए वैसा रूप धारण करना पड़े। चोर-डकैतों को संभालने के लिए, सुधारने के लिए भी सी.आई.डी पुलिस को थोड़े समय के लिए क्या बनना पड़ता है? चोर-डकैत बनना पड़ता है, उनके साथ मिक्स होना पड़ता है। तो बताया वो ऊँच-ते-ऊँच बाप (शिव) निराकार है, (और) शंकर आकारी है।

शिव है भोलानाथ, ज्ञान का सागर। शंकर को (सदा) ज्ञान का सागर नहीं कह सकते। क्या! ज्ञान का सागर नहीं कह सकते? तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा भोलानाथ आकर हमारी झोली भर रहे हैं। आदि-मध्य-अंत का राज़ बता रहे हैं। किस चीज़ का आदि-मध्य-अंत? इस सृष्टि के आदि-मध्य और अंत का राज़ कोई मनुष्य के जानने की चीज़ नहीं है। मनुष्य अपने आप नहीं जान सकता। मनुष्य को जानकारी देने वाला वह एक निराकार शिव है, जो जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता। मनुष्य तो जन्म-मरण के चक्र में आता है। जन्म-मरण के चक्र में आता है, तो पूर्वजन्मों की बातें भूल जाता है। मनुष्य तो बंधन में बँधा हुआ है, वो सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को कैसे जान सकता है? रचयिता और रचना का राज़ बहुत सिम्पल है जो बाप आकर बताते हैं। सिम्पल कब होता है? जब बाप शिव आकर के बताते हैं, तब बहुत सिम्पल हो जाता है। बड़े-2 ऋषि-मुनि भी इन सहज बातों को नहीं जान सकते। बड़े-2 ऋषि मुनियों से ये पूछा जाय कि सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का राज़ बताओ, तो कहेंगे- (नेति-2) बेअंत है-2। जबकि वे रजोगुणी नहीं जानते थे। वे ऋषि-मुनि तो द्वापरयुग से हुए। सतयुग-त्रेता में राम-कृष्ण जैसे देवताएँ थे। द्वापरयुग से जब से द्वैत पैदा हुआ, दो-2 पुर बन गए, दो पुर बनेंगे तो दो-2 राज्य भी बनेंगे, दो-2 राज्य बनेंगे तो दो-2 धर्म भी बनेंगे। तो जब से द्वैत पैदा हुआ इस सृष्टि पर, तब से रजोगुण की शुरूवात हुई। उस रजोगुणी सृष्टि में जो पैदा होने वाले मनुष्य हैं वही जब सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के राज़ को नहीं जानते थे तो आज की तमोगुणी (कलियुगी) सृष्टि के मनुष्य कैसे जान सकते हैं।

अब तुम बच्चे बाप के सम्मुख बैठे हो। कौन जानेंगे? जो बाप के सन्मुख बैठे हुए बच्चे होंगे वही जान सकते हैं। सन्मुख बैठे हुए का भी अर्थ समझना पड़ता है। सन्मुख कौन है और विमुख कौन है? मान लो, कोई स्थूल रूप में शरीर से सन्मुख बैठा हुआ है और अंदर से उसको विकल्प आ रहे हैं, विपरीत संकल्प आ रहे हैं तो उसे सन्मुख कहा जाएगा कि विमुख कहा जाएगा? फिर तो विमुख हुआ। तो बोला, तुम बच्चे बाप के सन्मुख बैठे हो। जो अंदरूनी तरीके से (और) बाहरी तरीके से (भी) सन्मुख होकर के बैठे हैं वे इन बातों को जान सकते हैं। बाप अमरकथा सुना रहे हैं। कौन-सी कथा? अमरकथा। अमर किसको कहा जाता है? अमर मतलब जो मरता नहीं है। क्यों, इस सृष्टि पर ऐसा कौन है जो कभी मरता ही नहीं है? (किसी ने कहा- शिव परमात्मा) शिव? शिव

(निराकार ज्योतिबिंदु) के जन्म लेने और मरने की बात ही नहीं। तो जब वह गर्भ से जन्म ही नहीं लेता तो मरेगा कैसे? उसकी तो बात ही नहीं। माना जो भी 33 करोड़ देवताएँ हैं, जन्म लेने वाले हैं और मृत्यु को पाने वाले हैं, फिर शास्त्रों में उनको अमर क्यों कह दिया? शंकर को अमरनाथ क्यों कह दिया? (किसी ने कहा- उसको कोई मरता हुआ नहीं देखता) हाँ, जितनी भी 500/700 करोड़ मनुष्यात्माएँ हैं, उनको शिव आकर जब पुरुषार्थ कराता है तो उनमें से एक ऐसा है जगतपिता, जिसको शास्त्रों में 'जगतम् पितरम् वंदे' कहा गया। उसको मरते हुए किसी ने नहीं देख पाया, इसलिए उसको अमर कहा जाता है। दूसरे अर्थ में अमर इसलिए कहा जाता है कि (चंचल मन वाले) मनुष्यों की तो मौत आती ही आती है चाहे वो इच्छा करें या न करें; लेकिन देवताओं की मृत्य उनकी इच्छा के अनुकूल होती है। जब वो संकल्प करेंगे तो मृत्यु होगी। अगर संकल्प न करें तो मृत्यु उनके नज़दीक नहीं आ सकती। इसलिए उनको अमर कहा जाता है। अब तुम बच्चे बाप के सन्मुख बैठे हो। बाप अमरकथा सुना रहे हैं। तो यहाँ संशय नहीं आना चाहिए। गीता में भी क्या कहा गया? "संशय बुद्धि विनश्यते, निश्चय बुद्धि विजयते" (गीता 4/39+40) ।

कोई भी मनुष्य वा ब्रह्मा वा विष्णु अथवा शंकर हमको नहीं सुनाते हैं। हम किसी देवताओं से ये नॉलेज नहीं सुनने वाले हैं। हम किससे सुनने वाले हैं? ऊँच-ते-ऊँच जो परमपिता है हम उससे ये नॉलेज सुनते हैं। मनुष्यों की नॉलेज तो शास्त्रों में हज़ारों वर्षों से चलती चली आई। शास्त्रों को पढ़ते-2 कोई अमर नहीं बना। एक परमपिता-परमात्मा बाप ही ऐसा है जो गीता ज्ञान सुनाकर नर को नारायण जैसा देवता बनाता है। मनुष्य को देवता बनाना किसी मनुष्य की बस की बात नहीं हो सकती। भोलानाथ शिवबाबा कहते हैं- मुझे तो अपना शरीर ही नहीं है। उनका रोना क्या है? उनका रोना है मुझे अपना शरीर नहीं है। तो क्या करता हूँ? गीता में भी लिखा है- "प्रवेष्टुं" (गीता 11/54) मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। मैं प्रवेश कर सकता हूँ। जैसे भूत-प्रेत प्रवेश कर जाते हैं। उनको तो अपना सूक्ष्म शरीर होता है; लेकिन परमपिता शिव को अपना सूक्ष्म शरीर भी नहीं, तो स्थूल शरीर भी नहीं; लेकिन प्रवेश कर सकता है। मैं निराकार हूँ। मेरी सदैव निराकारी स्टेज रहती है। मैं देह के भान में आने वाला नहीं हूँ। ऐसे नहीं कि कर्मेन्द्रियाँ मेरे को अपने बंधन में बाँध लेंगी। ये साकार देह मेरी बुद्धि को अपने बंधन में नहीं बाँध सकती। पूजा भी मुझ निराकार की ही होती है।

क्या कहा? पूजा भी कब होती है? जब मेरा निराकारी स्वरूप संसार में (मुकर्रर रथ द्वारा) प्रत्यक्ष होता है तो पूजा होती है। कोई भी देवताओं की, देवियों की पूजा का आधार क्या है? ज़रूर उन्होंने प्रैक्टिस करके निराकारी स्टेज बनाई है, आत्मिक स्टेज बनाई है। उस (नं.वार ऊँची) आत्मिक स्टेज के आधार पर उनकी पूजा होती है। जितनी-2 निराकारी स्टेज बनेगी, साकार इन्द्रियों के भान से परे होते जाएँगे, तो उनकी इन्द्रियाँ पूजी जाएँगी। अगर देवताएँ साकार इन्द्रियों के भान से परे नहीं होते, तो उनकी पूजा नहीं हो सकती। (1 मात्र शिवबाबा की लिंग-पूजा होती हैं)

शिवजयंती भी होती है। इसका मतलब क्या हुआ? जयंती किसकी होगी? जो (साकारी देह से) जन्म लेगा उसकी जयंती होगी, जन्म नहीं लेगा तो जयंती कहाँ से होगी। जन्मदिवस कैसे मनाया जाएगा ? वो (अगर्भा शिव) तो गर्भ से जन्म लेता ही नहीं तो जयंती कैसे? किसी का जन्म होता है तो वो संसार में प्रत्यक्ष होता है। प्रत्यक्ष होता है तो सबको पता चलता है कि बच्चे ने जन्म लिया, पैदाइश का मालूम पड़ जाता है। ऐसे ही शिव निराकार जब इस सृष्टि पर आता है, किसी तन में प्रवेश करता है तो किसी को पता नहीं चलता कि उसने जन्म लिया। कोई भी ब्रह्माकुमार - कुमारियाँ अगर ये कहते हैं कि हम शिवजयंती मनाते हैं तो वो साबित करना पड़े कि शिवजयंती मनाते हो तो बताओ, साबित करो किस दिन शिव ने जन्म लिया? अगर जन्म ही नहीं लिया, जन्मदिन साबित नहीं कर सकते तो शिवजयंती कैसे मनाते हो? जैसे दुनियाँ वाले परम्परा मुआफ़िक मनाते चले आ रहे हैं, ऐसे ही तुम मनाते हो। तो असली शिवजयंती कब कहें? जब दुनियाँ वालों को ये पता लग जाये कि शिव इस सृष्टि पर अमुक (मुकर्रर) तन में आया हुआ है। सारी सृष्टि में ये ढिढोरा पिट जाये। जैसे भारत में बच्चे की पैदाइश होती है तो ढोल-मंजीरा बजाते है। यादगारें तो यहाँ की चली आ रही हैं ना। शिव भी जब इस संसार में प्रत्यक्ष होता है तो चारों तरफ ज्ञान के (बाजे-गाजे- या मुख रुपी शंख) नगाड़े बजना शुरू होते हैं। मुझ निराकार बाप की जयंती नहीं होती है। सब आत्माओं की भी जयंती होती है। माना हद की बात नहीं बताई। जो भी 33 करोड़ देवताएँ हैं उनकी भी असली जयंती तब होती है, जबकि उनके अपने जन्मों में से श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ जन्म का जो पार्ट है वो खुल जाता है। कौन-सी आत्मा इस सृष्टि रूपी चक्र में सबसे श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाली है उसका वो पार्ट खुल जाये तो समझो उसकी जयंती हो गई। तो बेहद में हर आत्मा

की भी जयंती होती है और शिव की भी जयंती होती है। पुनर्जन्म में सब आते ज़रूर हैं। वो तो गर्भ से जन्म में आते हैं, मरण में भी आते हैं वो बात बताई। बाप तो जन्म-मरण रहित है। बाप तो गर्भ से जन्म लेता नहीं और उसकी दुनियावी मृत्यु होती भी नहीं।

वो भोलानाथ है। ज़रूर आकर सभी की झोली भरेंगे। कैसा भोला है? है स्वयं बिदु। बिदु है; लेकिन सिधु है। शास्त्रों में उसकी महिमा कर दी है। महिमा किस रूप में की है? "पूर्णमिदं पूर्णमदः पूर्णात्पूर्णमुदिच्यते" वो सदैव पूर्ण है। कैसा पूर्ण है? पूर्ण में से पूर्ण निकाल लो तो भी पूर्ण बचेगा, ऐसा वंडरफुल पूर्ण है। वो ज्योतिबिदु शिव इस सृष्टि पर जब आता है तो इस सृष्टि को ऐसा ज्ञान सुनाता है कि सारी सृष्टि ज्ञान से सराबोर हो जाती है। ज़रूर आकर ज्ञान धन से सबकी झोली भरेगा। कैसे झोली भरेगा? जो भी आत्माएँ हैं चाहे 84 जन्म लेने वाली हों, चाहे कम जन्म लेने वाली हों, हर आत्मा को, जो आत्मा रूपी एक्टर्स हैं, जो शरीर रूपी चोला धारण करके पार्ट बजाने वाले हैं उन सबको अपने-2 (श्रेष्ठतम संगमयुगी) पार्ट का पता चलेगा, इतना तक ज्ञान सुनाएगा। ऐसा ज्ञान इस सृष्टि पर किसी ने नहीं सुनाया होगा कि हीरो पार्टधारी से लेकर पाँच सौ करोड़वीं अंतिम आत्मा तक जिसका-2 जैसा-2 पार्ट है, सबको अपने अनेक जन्मों के पार्ट का पता चल जाये। अगर नहीं पता चलता तो सुप्रीम सोल बाप का कहना है कि वो एक्टर है बेवकूफ, जिसको अपने पार्ट का ही पता नहीं। हम सब ज्योति बिदु-2 आत्माएँ हैं, ज्योतिबिदु आत्माओं को पता होना चाहिए कि हमने 84 के चक्र में कैसे 84 चोले धारण किए हैं। अगर नहीं पता, इतना तक मनन-चितन-मंथन नहीं चला है तो तब तक हम बेवकूफ एक्टर हैं।

इतना विशाल ज्ञान का भंडार पाँच सौ करोड़ मनुष्यात्माओं को देने वाला वो भोलानाथ है। भोलों का नाथ है। नाथ माना स्वामी। बैल को नाथ डाली जाती है ना। अपने (भारतीय) भक्तिमार्ग में स्त्री को क्या डाली जाती (है)? नथनिया। तो जैसे कि पुरुष नाथ लेता है। तो वो है परम पुरुष। हम सब भोले बच्चों का नाथ है। वो नाथ तब साबित होगा जब हम उस भोलेनाथ को भोले के रूप में पहचान लें। हम अपनी तिकड़म भिड़ाते रहते हैं बुद्धि से। बाप कुछ डायरैक्शन देता रहता है। हम कुछ न कुछ (अपने मनमाने) रास्ते पर चलते रहते हैं। तो इसका मतलब हमने उस भोलेनाथ को पूरी रीति पहचाना नहीं। वो भोलानाथ है, ज़रूर आकर सभी की झोली भरेंगे। ये बुद्धि रूपी

झोली सबकी एक दिन भर जाएगी। जब एक-2 की पूरी झोली भर जाएगी तो आत्मा को कितना मज़ा आएगा! इतना मज़ा आएगा कि हर आत्मा अपने-2 पार्ट से संतुष्ट हो जाएगी। कोई ये नहीं कहेगा कि हमारा पार्ट खराब है, सबको संतुष्टि हो जाएगी। कैसे भरेगा वह झोली? ये तुम बच्चे जान सकते हो। अगर चाहो तो ये बात तुम बच्चे जान सकते हो कि वो आकर झोली कैसे भरेगा। अभी किसी की झोली पूरी भरी नहीं है। अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भर देते हैं। ...... जिसके लिए शास्त्रों में कहा गया- 'ज्ञानी तू आत्मा मुझे विशेष प्रिय है।' किसको? उस (परमपिता) परमात्मा को। ज्ञान रत्न ही उस सुप्रीम सोल की संपत्ति है। वह परमधाम से कोई दूसरी संपत्ति लेकर नहीं आता है, ज्ञान रत्नों की संपत्ति (का अखूट भंडार) लेकर के आता है। उन ज्ञान रत्नों की संपत्ति को जो आत्मा जितना वैल्यू देती है तो वैल्यू देने वाली आत्मा उतनी ही ज़्यादा पावरफुल बनती है। तो बताया अविनाशी ज्ञान रत्नों से तुम झोली भरते हो। यही नॉलेज है। (जो) ज्ञान सागर आए ज्ञान देते हैं।

गीता तो वही एक ही है; परंतु संस्कृत श्लोक आदि तो हैं नहीं। ये यज्ञ की हिस्ट्री बता रही है कि सन् 36 में जब ये ज्ञान यज्ञ शुरू हुआ था तो वही पुरानी संस्कृत की गीता पढ़कर सुनाते थे, अर्थ करके सुनाते थे। आदि में क्या करते थे? ओम ध्वनि का उच्चारण करते थे। तो जो आदि में हुआ वो अंत में भी होना है। माना आदि में भी वही संस्कृत की गीता थी और अंत में भी वही संस्कृत गीता के श्लोक इस (ओरली सुनाए गए) ज्ञान को पूरा सच्चा साबित करेंगे। गीता तो एक ही है; परंतु संस्कृत श्लोक आदि तो अभी नहीं हैं जो बाप आकर सुनाते हैं। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट ने भी आकर अपने-2 धर्म स्थापन किए, गुरूनानक ने भी आकर अपना धर्म स्थापन किया, मोहम्मद ने आकर के मुस्लिम धर्म स्थापन किया। क्या उन्होंने हाथ में (किताब) लेकर कुराण पढ़ी थी? क्राइस्ट ने क्या बाइबल (किताब) पढ़ी थी? नहीं। सभी धर्मपिताओं ने क्या किया? आकर डायरैक्ट मुख से (ओरली) बोला। (परमपिता) परमात्मा भी इस सृष्टि पर आता है तो आकर डायरैक्ट मुख से बोलता है। कोई ग्रंथ आदि रेफर नहीं करता है; लेकिन जो कुछ भी बोलता है वो बातें वही हैं जो गीता में हैं। गीता की टीकाएँ अब 108 से भी ऊपर हो चुकी हैं। तिलक गीता, गाँधी गीता, शंकराचार्य गीता, माधवाचार्य गीता, वशिष्ठ गीता, अष्टावक्र गीता; लेकिन जो भी

गीताएँ हैं उनमें बातें ऐसी-2 आती हैं कि एक-दूसरे का काट करने वाली। तो कौन-सी गीता सच्ची? ज़रूर (चंचल मन वाला विकारी) मनुष्य जो अर्थ करेगा (झूठा ही करेगा); मनुष्य (चंचल मानवाला) मनुष्य है, देवता भी नहीं है। देवताएँ ज़्यादा पवित्र होते हैं या मनुष्य ज़्यादा पवित्र होते हैं? देवताएँ विकारी होते हैं या मनुष्य विकारी होते हैं? मनुष्य विकारी होते हैं। तो मनुष्यों के लिखे हुए वेद-शास्त्र भी झूठे हो सकते हैं, उनकी टीकाएँ भी झूठी हो सकती हैं। इसलिए ये गायन भी है- "कै समझे कवि, कै समझे रवि" या तो कवि अपनी कविता का अर्थ समझ सकता है या तो ज्ञान सूर्य परमात्मा ही इस सृष्टि पर उतर आए तो उन कविताओं का सही अर्थ बता सकता है।

गीता तो वही है; लेकिन अभी जो कुछ (परमपिता) परमात्मा बाप आकर सुनाते हैं वो संस्कृत के श्लोकों में नहीं सुनाते हैं। आज की दुनियाँ में कहीं देखा कोई गाँव, कोई शहर, कोई देश? ऐसा सुना, जहाँ संस्कृत बोली जाती हो ? मातृभाषा संस्कृत हो? नहीं। संस्कृत का अर्थ ही है सुधारी हुई, उसको (पाणिनि द्वारा) सेट किया गया है। वास्तव में वो भाषा कभी बोली नहीं जाती रही। प्राकृत, पाली आदि पुरानी भाषाएँ बोली जाती रही हैं। संस्कृत भाषा में जो श्लोक लिखे गए हैं वो श्लोक सिर्फ विद्वानों की चीज़ रही है। परमात्मा बाप आकर वो श्लोक नहीं सुनाता। वह तो आकर असली भाव समझाता है। भोली माताएँ संस्कृत आदि से क्या समझेंगी? भोली-2 माताएँ हैं, वे तो इतनी पढ़ी-लिखी भी नहीं होती हैं उनके सामने परमात्मा बाप आकर संस्कृत सुनाने लगे, संस्कृत के श्लोक सुनाने लगे तो वे तो बिचारी कुछ नहीं समझेंगी। तो (परमपिता) परमात्मा सुप्रीम सोल आकर ये विद्वता नहीं झाड़ता। वो तो आकर सीधे-2 शब्दों में ज्ञान सुनाता है, जो गीता ज्ञान संस्कृत गीता में दिया हुआ है। गीता वही है; लेकिन उसके अर्थों में अंतर पड़ जाता है। तो इन माताओं के लिए भोलानाथ बाबा आते हैं। ये माताएँ,बिचारियाँ तो घर के काम आदि में रहती हैं (खास)। ये तो अभी फ़ैशन पड़ा है जो नौकरी आदि के लिए निकल पड़ी हैं। ये फ़ैशन भी कहाँ से आया कि माताएँ बाहर जाकर नौकरी करती हैं? विदेशों से ये फ़ैशन आया है। तो बाबा आकर बच्चों को ऊँच-ते-ऊँच पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। जो बिल्कुल ही कुछ नहीं पढ़ती थी उन्हों पर पहले-2 कलश आकर रखते हैं, जो शास्त्रों में (लक्ष्मी का) गायन है। शास्त्रों में क्या गायन है? ज्ञान का कलश किसको दिया? (किसी ने कहा- माताओं को दिया) कौन-सी माता को दिया? (किसी ने

कहा- जगदम्बा) जगदम्बा को भी दिया+लक्ष्मी को भी दिया। सागर मंथन हुए, देवताओं और असुरों ने जो सागर मंथन किया, ज्ञान सागर का जो मंथन किया उस मंथन से जो रत्न निकले उन रत्नों में विशेष (ज्ञान-अमृत का) कलश निकला। उस ज्ञान कलश का भार किसके ऊपर दिया? लक्ष्मी+जगदम्बा (=महा ल.) के ऊपर दिया।

तो बोला, बाबा आप बच्चों को ऊँच पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। तुम्हारे ऊपर कलश रखते हैं पढ़ाई का। ये तो सब भक्तियाँ, सीताएँ हैं। राम आए हैं रावण की लंका से मुक्त करने के लिए। दुखों से मुक्त करने के लिए आए हैं। फिर ज़रूर बाप के घर (अ+योध्या) ही जावेंगे और बाप के साथ ही जावेंगे। और कहाँ जावेंगे? याद भी घर को करते हैं, हम दुख से मुक्ति पावें। बच्चे जानते हैं बीच में किसको भी मुक्ति नहीं मिलेगी। जैसे मनुष्य गुरू कहते चले आए कि महात्मा बुद्ध ने जो ज्ञान सुनाया उससे निर्वाण को प्राप्त किया। तो चाहे सतयुग हो, चाहे त्रेता हो, चाहे द्वापर हो, चाहे कलियुग हो, किसी युग में कोई भी मुक्ति प्राप्त नहीं करता, कोई निर्वाणधाम वापस नहीं जा सकता। अगर कोई निर्वाणधाम वापस गए होते तो दुनियाँ की आबादी कम हुई होती या बढ़ती? दुनियाँ की आबादी तो कम हो जानी चाहिए; लेकिन नहीं, इस सृष्टि पर जो भी आया, वो (जड़ प्रकृतिकृत दैहिक) अज्ञानता में, जन्म-मरण के चक्र में आकर नीचे ही गिरता चला गया। मैंटलिटी नीचे गिरती चली जाती है। (क्रमशः) काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बढ़ते चले जाते हैं। बुद्धि विकृत होती जाती है। कलियुग के अंत में जब बुद्धि पूरी ही विकृत हो जाती है, मनुष्य की बुद्धि कौड़ी मिसल हो जाती है। कौड़ी के शेप के मिसल बुद्धि ऐसी बन जाती है जिसमें सिवाय (कोड़ी रूप गर्त) के और कुछ याद नहीं आता। तब परमात्मा आकर वह ज्ञान देता है, जो उस कौड़ी जैसी बुद्धि को हीरे जैसा बनाता है। तो हीरे जैसा बनाने वाला, कौड़ी लेने वाला और क्या देने वाला? हीरा देने वाला, वो एक भोलानाथ इस सृष्टि पर आया हुआ है। सबको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाता है।
इस सृष्टि वृक्ष का जो मुख्य फाउंडेशन, मुख्य पहली जड़ है वो सड़ जाती है। गीता में भी सृष्टि-वृक्ष बताया हुआ है। ये सृष्टि-वृक्ष ऐसा है जिसकी देवी-देवता सनातन धर्म की (ऊपर की) मूल जड़ सड़ गयी है, बाक़ी सब धर्म खड़े हुए हैं। सनातन धर्म में सड़ाँध लग गई जिससे सनातन धर्म अब प्रायः लोप हो चुका है। जिस सनातन धर्म की परमात्मा बाप ने आकर 5000 वर्ष पहले गीता ज्ञान

सुनाकर स्थापना की थी, वो प्रायः लोप हो चुका। बाक़ी प्रायः कुछ देवताओं के चित्र आदि आकर बचे हैं। लक्ष्मी-नारायण के चित्र, राम-सीता के चित्र भी अभी तक हैं। बच्चों को इस पर समझाना है। क्या समझाना है? त्रेतायुग में राम-सीता का राज्य था, सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। सतयुग होता है 16 कला सम्पूर्ण तो नारायण भी 16 कला सम्पूर्ण थे। 'हे कृष्ण नारायण वासुदेव'- कृष्ण को, नारायण को, वासुदेव को 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है। सतयुग में पीढ़ी दर पीढ़ी जन्म लेते-2 आत्मा की शक्ति क्षीण होती है तो त्रेता में 2 कलाएँ कम हो जाती हैं। आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाती है। सभी समझते हैं प्रिंस-प्रिंसेज, फिर महाराजा-महारानी लक्ष्मी-नारायण बने। ज़रूर पहले बच्चे के रूप में जन्म लिया होगा फिर बड़े हुए होंगे, टाइटिल धारण किया होगा। जो समझू बच्चे हैं वही सतयुग में मालिक बनेंगे। देवताएँ कब पतित दुनियाँ में पैर नहीं रख सकते। श्रीकृष्ण तो वैकुण्ठ का प्रिंस है। सुधरा हुआ मनुष्य है। सुधरे हुए मनुष्य को ही कहा जाता है देवता और बिगड़े हुए मनुष्य को कहा जाता है राक्षस। 16 कला कृष्ण को देवी-देवता सनातन धर्म का कहेंगे।

वास्तव में देवताएँ ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तो सूक्ष्मवतन में रहते हैं। यहाँ मनुष्य रहते हैं। कौड़ी जैसे मनुष्य को सूक्ष्मवतनवासी देवता नहीं कह सकते। जो मनुष्य है, जिसको मन है, 'मननात् मनुष्य:' जो ईश्वरीय ज्ञानयुक्त मनन-चिंतन कर सकता है; लेकिन वैसा मनन-चिंतन करना चाहिए वो करता नहीं है। किस बात का मनन-चिंतन? मनु की औलाद मननात् मनुष्य कहा जाता है तो उसको मनन-चिंतन-मंथन सात्विक करना चाहिए ना। कौन-सा सात्विक? जो आत्मा है उस आत्मा को अपना और परमात्मा का मनन-चिंतन करना चाहिए; लेकिन आत्मा और परमात्मा के मनन-चिंतन-मंथन से परे मनुष्यात्मा आज एटम का मनन-चिंतन-मंथन कर रही है। एटम बॉम्ब बना रही है। तो मनुष्य हुई या राक्षस हुई? राक्षस तो अपने (ही) घर में आग लगा लेता है। किसी के अंदर भूत प्रवेश होता है तो क्या करता है? अपने घर को ही तहस-नहस कर देता है। तो बताया ऐसे मनुष्य को सूक्ष्मवतनवासी देवता नहीं कह सकते। जो मनुष्य सूक्ष्मवतनवासी देवता बन जायेगा, वो क्या बन जायेगा? फरिश्ता। फरिश्ता का मतलब? जिसका इस फर्श की दुनियाँ वालों से कोई रिश्ता न रहे। माने देह और देह के संबंधियों के बारे में कोई चिंतन न करे। क्या चिंतन करे ? आत्मा

का चितन करे, परमात्मा का चितन करे, इस सृष्टि का कल्याण कैसे हो इस बात का चितन करे, वह है फरिश्ता। दूसरे धर्मों में भी फरिश्ताएँ गाए जाते हैं। भारतवर्ष में फरिश्ताएँ नहीं गाए जाते, देवताओं की पूजा होती है, जो फरिश्ताओं की भी स्टेज से ऊँचा उठ जाता है। फरिश्ता संसार के कल्याण के लिए, मनन-चितन-मंथन करने वाला है इसलिए उसको फरिश्ता कहा जाता है; लेकिन जो मनन-चितन-मंथन की स्टेज से भी ऊँचा चला गया, एकदम निराकारी स्टेज में चला जाता है वो देवतुल्य हो जाता है, जिसकी अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों पर जीत हो जाती है। तो बोला, राक्षसी मनुष्य को सूक्ष्मवतनवासी देवता नहीं कह सकते। ब्रह्मा के लिए कहा जाता है- ब्रह्मा देवताए नमः, विष्णु देवताए नमः। कहते तो हैं ना। देवी-देवताएँ नमः, श्री लक्ष्मी नम: 'श्रीकृष्ण देवताय नमः।'

मनुष्य को ही 84 जन्म लेने पड़ते हैं। अभी हम बच्चे जानते हैं कि बरोबर हम असुल देवता धर्म के थे। अभी हम दूसरों को दुख देने वाले राक्षस बन पड़े। कोई दिन ऐसा जाता है सुबह से शाम तक जो हम मन, वचन और कर्म से, मन के संकल्पों से, वाचा की भाषा से और कर्मेन्द्रियों के कर्म से- कभी किसी को धोखा न देते हों, दुख न देते हों, तंग न करते हों अथवा खुद तंग न होते हों? जो न दूसरों को तंग करता है, न दूसरों से तंग होता है उसके लिए गीता में बोला है- "यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः" (गीता 12/15) ज्ञान सारा वही है गीता का। जो संसार को उद्वेग पैदा करने के निमित्त नहीं बनता और जो संसार के लोगों से उद्वेजित नहीं होता, माना खुद दुखी नहीं होता और दूसरों को भी दुख नहीं देता। ऐसी स्टेज धारण करनी है। न दुख लेना है और न दुख देना है। तो हम बच्चे जानते हैं हमारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरूनानक का जो धर्म है वो मानवीय धर्म है, मनुष्यों के द्वारा स्थापन किया हुआ धर्म है; लेकिन हमारा जो धर्म है जो निराकार सो साकार परमपिता इस सृष्टि पर आकर स्थापन करते हैं वो बहुत सुख देने वाला है। इसलिए अपने इस (दैवी) धर्म की स्थापना करने के लिए अगर प्राण भी देना पड़े तो खुशी-2 प्राण अर्पण कर देना चाहिए। भागने की बात नहीं है। नहीं तो हिन्दुओं ने क्या किया? मुसलमानों ने जहाँ तलवार उठाई उन्होंने मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया। बाप कहते हैं- "स्वधर्मे निधनम् श्रेयः" (गीता 3/35) अपने धर्म में मर जाना अच्छा है। दूसरे के धर्म में कनवर्ट होंगे तो बहुत दुख सहन करने पड़ेंगे। दूसरे धर्म में कनवर्ट करने वाले दास-दासी बनाकर रखेंगे। "सबते सेवक धरम

कठोरा" दास-दासी का जो धर्म है वो सबसे कठोर होता है। बहुत दुख झेलने पड़ते हैं। तो ये कोई कह न सके कि हम इस धर्म में क्यों आ गए? हम देवी-देवता सनातन धर्म में क्यों नहीं हुए? क्यों नहीं कह सके? बिच्छू कभी कहेगा कि हमें डंक मारना अच्छा नहीं लगता ? उसका तो धर्म है। वो कोमलता देखेगा तो डंक मार देगा। जो जिस धर्म का है उसको अपना धर्म प्यारा लगता है। अपनी ही धारणा में वो खुश रहता है।

ये तो जानते हैं ना कि आदि सनातन देवी-देवता धर्म आदि में था। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट से पहले धर्म था कि नहीं था? इस्लाम धर्म, क्रिश्चियन धर्म, बौद्ध धर्म, इनसे पहले भी सृष्टि पर धर्म था कि नहीं था? जब से ये मनुष्यों की 2500 वर्ष की हिस्ट्री है, तब से ये मनुष्यों के धर्म स्थापन हुए। उससे पहले भी इस सृष्टि पर धर्म था और वो वही धर्म था जो परमपिता परमात्मा ने खुद आकर के स्थापन किया था। वो मानवीय धर्म नहीं था। मनुष्यों के द्वारा स्थापन किया हुआ धर्म नहीं था। स्वयं परमात्मा ने उस धर्म की स्थापना की थी। बाक़ी सब धर्म बाद में नम्बरवार आते हैं। कब आते हैं? जब भी मनुष्यों के द्वारा फैलाए हुए अनेक धर्म आते हैं तब से इस सृष्टि पर द्वैत चालू हो जाता है। द्वैत माना दो-2 बातें शुरू हो जाती हैं, जब दो बातें शुरू हो जाएँगी तो दो प्रकार की धारणा हो जाएँगी, दो-2 धर्म हो जाएँगे, दो-2 राज्य हो जाएँगे, मतें (और भाषाएँ) बहुत सी हो जाएँगी और फिर सब आपस में टकराते हैं। वही मारा-मारी वाली नर्क की सृष्टि बन जाती है। तो मानवीय धर्म नर्क बनाते हैं और ईश्वर जो धर्म स्थापन करता है उससे स्वर्ग बनाता है। हम बच्चे इस बात को समझा सकते हैं। कौन-सी बात? कि आदि में सिर्फ एक ही धर्म था और सब धर्म वाले उस आदि पिता (आदम को) मानते भी हैं। क्रिश्चियन के बाइबल में भी है ऐडम और ईव सृष्टि के आदि (माता)-पिता थे। मुसलमानों की कुरान में भी, एन्जिल में भी आदम और हव्वा का गायन रहा है। वो विधर्मी-विदेशी भी सृष्टि के आदि करने वाले को जानते हैं। जो सृष्टि (का) आदि करने वाला था उसके बारे में जितनी लम्बी-चौड़ी हिस्ट्री भारतीय साहित्य में मिलती है, उतनी और किसी धर्म ग्रंथों में नहीं मिलती।

तो हम बच्चे ये बातें समझा सकते हैं। ये अनादि बना-बनाया खेल है। इसमें फिर से सतयुग होगा, ये ऐसा अनादि बनाया हुआ सृष्टि रूपी खेल है। सृष्टि अनादि है, इसकी कभी आदि नहीं

होती, इसका कभी अंत नहीं होता। ये चार युगों का चक्र यूँ ही फिरता रहता है- सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। जैसे मनुष्य आत्माएँ जन्म लेती हैं, बचपन आता है, जवानी आती है, बुढ़ापा आता है फिर मृत्यु होती है, फिर जन्म होता है। तो जैसे ये चक्र चलता रहता है वैसे इस सृष्टि का भी चक्र चलता रहता है। तो इसमें फिर से सतयुग होगा। भारत में ही सतयुग होता है। सबसे ज़्यादा झूठखंड भी कौन-सा देश बनता है? भारत ही झूठखंड बनता है। अभी विदेशी लोग भारत में आते हैं तो यहाँ से तुरंत भागने की कोशिश करते हैं। क्यों? क्योंकि उन्हें यहाँ जितना झूठापन, चोर-डकैत, धूर्त देखने में आते हैं, उतना संसार में और कहीं देखने में नहीं आते। भारत में ही स्वर्ग होता है, भारत में ही रौरव नर्क होता है। भारत ही अविनाशी खंड है। और धर्मखंड विनाशी हैं। चाहे क्रिश्चियन अमेरिकन धर्मखंड हो, चाहे अरबियंस मुसलमान धर्मखंड हो, चाहे जापानी बौद्धी धर्मखंड- तिब्बत, चीन आदि हो, वो सब विनाशी हैं। प्रूफ क्या है? ढाई हज़ार वर्ष की जो हिस्ट्री है वो हिस्ट्री इस बात का प्रूफ है। आज से 350 साल पहले मनुष्य के मस्तिष्क पटल पर ऑस्ट्रेलिया का नाम-निशान नहीं था। आज से (साढ़े) पाँच सौ साल पहले मनुष्य के मस्तिष्क में अमेरिका का नाम-निशान नहीं था। पहली बार कोलम्बस ने उसको ईजाद किया। नाँव लेकर अचानक अनकाचित पहुँच गया। देखा तो वहाँ एंग्लो इण्डियंस लोग रहते थे। माना वो लोग भी कहाँ के रहने वाले थे? इंडिया से भटक करके कहीं जहाज से पहुँच गए तो वहीं के वासी हो गए। उन्हें वापस आने का रास्ता भूल गया। सबसे पुराना देश अविनाशी खंड है- भारत खंड। यहाँ देवताएँ भी होते हैं और वही देवताएँ अनेक जन्म लेते-2, जब उनका आत्मा रूपी बीज कई बार इस सृष्टि पर जन्म-मरण के चक्र में आता है, तो जन्म-मरण के चक्र को प्राप्त करते-2 आत्मा एकदम नीचे गिर जाती है। बाद में आने वाले विदेशियों की आत्माएँ इतनी नीचे नहीं गिरती, दूसरे धर्मखंड वालों की आत्माएँ इतनी नीचे नहीं गिरती, जितना भारतवासी नीचे गिरते हैं। ये देवताएँ ही थे और आखिरी जन्मों में आकर दैत्य जैसे बन जाते हैं। (सुप्रीम) बाप का जन्म भी यहाँ होता है। सुप्रीम सोल बाप भी इसी भूमि पर आता है। जो सबसे गिरा हुआ है उस सबसे ज़्यादा गिरे हुए को उठाने वाला एक परमपिता-परमात्मा भी भारत में आता है। उनका दिव्य जन्म है, साधारण जन्म नहीं है। वो नर्क को स्वर्ग बनाने वाला है।

जो भारत पहले (प्राचीन काल में) स्वर्ग था। उसका नाम क्या था? सत+युग। वही भारत अभी पापी कलियुगी नर्क बन पड़ा है। स्वर्ग को सभी याद तो ज़रूर करते हैं। सभी धर्म वाले स्वर्ग को, जन्नत को, पैराडाइज़ को याद करते हैं या नहीं करते हैं? याद करते हैं ना। याद करते हैं माना उनकी आत्मा में स्वर्ग (के सुख) भोगने के संस्कार हैं। विशेष आत्मा चाहे क्रिश्चियन्स हो, चाहे मुसलमान हो उन्होंने ज़रूर स्वर्ग का सुख भोगा है। वो स्वर्ग अब इस सृष्टि पर फिर आने वाला है। नर्क को स्वर्ग बनाने वाला वो परमपिता-परमात्मा इस सृष्टि पर आया हुआ है। कब आते हैं? ये हम बच्चों को नॉलेज मिली है। दुनियाँ इन बातों को नहीं जानती। हमें तो शक की कोई बात नहीं कि ये बात ऐसे क्यों है? हमें कोई बात में शक, अनिश्चय पैदा नहीं होता। अगर कोई उल्टे-सुल्टे प्रश्न करते हैं तो कहा जाता है कि पहले बेहद के बाप और वर्से को याद करो। ढेर सारे प्रश्नों के डिटेल में उनको ले जाने की ज़रूरत नहीं है। पहले क्या करो ? पहले अपने बाप को ज्ञान-नेत्र से पहचानो और जो बेहद का बाप सुख-शांति का बेहद वर्सा देने वाला है, उस वर्से को पहचानो। अगर इन दो बातों को पहचान लिया तो तुम्हारे सारे प्रश्नों का समाधान स्वतः ही हो जाएगा। ओम् शांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025